सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीकी साधनायात्रा : खण्ड २

# सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी द्वारा की गुरुसेवा एवं उनका शिष्यत्व

हिन्दी (Hindi)


संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी



सनातन संस्था


मई २०२३ तक सनातनके ३६२ ग्रन्थोंकी हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगु, मलयालम, बांग्ला, ओडिया, पंजाबी, असमिया, सर्बियन, जर्मन, नेपाली, स्पैनिश, फ्रांसीसी, इन १७ भाषाओंमें ९३ लाख ६१ सहस्र प्रतियां !

# डॉ. जयंत आठवलेजीके गुरु
# प.पू. भक्तराज महाराजजीका संक्षिप्त परिचय

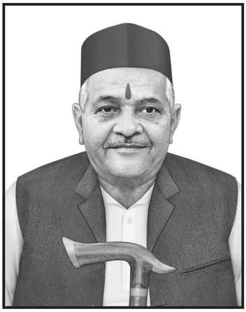

१. नाम : श्री. दिनकर सखारामपंत कसरेकर

२. जन्म : ७ जुलाई १९२० को मनासा, मध्य प्रदेश में सवेरे ७ बजकर १० मिनटपर

**३. प.पू. भक्तराज महाराजजी (प.पू. बाबा) के आध्यात्मिक जीवनकी कुछ प्रमुख घटनाएं**

**३ अ. प.पू. श्री अनंतानंद साईशजी (प.पू. बाबा के गुरु) के प्रथम दर्शन :** ९ फरवरी १९५६

**३ आ. श्री गुरुद्वारा गुरुमन्त्र मिलना :** १५ फरवरी १९५६

**३ इ. श्री गुरुद्वारा 'भक्तराज' ऐसा नामकरण करना :** १६ फरवरी १९५६

**४. प.पू. श्री अनंतानंद साईशजी (प.पू. बाबाके गुरु) तथा श्रीमत्परमहंस चंद्रशेखरानंदजी (प.पू. बाबाके गुरुके गुरु) का अल्प परिचय :** आदि शंकराचार्यजीद्वारा स्थापित चार मठोंमें से बद्रीनाथ मठके अन्तर्गत आनेवाला 'आनन्द सम्प्रदाय' उन्होंने तोटकाचार्यको सौंपा था । प.पू. भक्तराज महाराजजीके गुरु प.पू. श्री अनंतानंद साईशजी तथा प.पू. श्री अनंतानंद साईशजीके गुरु श्रीमत्परमहंस चंद्रशेखरानंदजी इसी परम्पराके थे ।

प.पू. श्री अनंतानंद साईशजीने नर्मदातटपर अनेक वर्ष कठोर तपस्या की । आगे शिर्डीके श्री साईंबाबाने उन्हें इंदौर जानेके लिए कहा । तदनुसार वे इंदौर आए । यहां उन्होंने दिनकरको (प.पू. भक्तराज महाराजजीका पूर्वाश्रमका नाम) गुरुमंत्र दिया, साथ ही 'दिनकरको भक्तराज' बनानेका कार्य किया । प.पू. श्री अनंतानंद साईशजीने १२ दिसम्बर १९५७ को देहत्याग किया ।

**५. 'भजन', 'भ्रमण' एवं 'भंडारा'में ही जीवन व्यतीत करनेवाले प.पू. बाबा ! :** प.पू. बाबाने अनेक भजन लिखे । शिष्यावस्थामें 'भजन' प.पू. बाबाकी

साधना एवं सेवा थी । गुरुपदपर आरूढ होनेपर 'भजन' प.पू. बाबाका शिष्योंको उपदेश करनेका तथा चैतन्यसे एकरूप होकर मार्गदर्शन करनेका एक माध्यम बन गया । 'शिष्योंकी आध्यात्मिक प्रगति करानी हो, तो गुरु-शिष्य संपर्क अधिकाधिक होना चाहिए', इस उद्देश्यसे प.पू. बाबाने लाखों किलोमीटर 'भ्रमण' किया । 'अन्नदान' एक श्रेष्ठ दान होनेके कारण प.पू. बाबाने सहस्रों 'भण्डारे' किए ।

**६. प.पू. बाबाका देहत्याग : १७ नवम्बर १९९५**

(प.पू. भक्तराज महाराजजीके विषयमें अधिक जानकारी हेतु पढें : सनातनकी मराठी भाषामें ग्रन्थमाला 'प.पू. भक्तराज महाराजजीका चरित्र [कुल ५ खण्ड]' तथा 'प.पू. भक्तराज महाराजजीकी शिक्षा [कुल ३ खण्ड]')


**विकार-निर्मूलन हेतु उपयुक्त जप बतानेवाले सनातनके ग्रन्थ !**

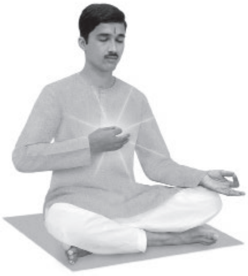

देवताका नामजप, अंकजप इत्यादि करनेसे देवताके स्पन्दन शरीरमें उत्पन्न होकर विकारद्वारा शरीरमें उत्पन्न हुए अप्राकृतिक स्पन्दन सुधारनेमें (विकार-निर्मूलनमें) सहायता होती है । आगे दिए ग्रन्थोंमें ३०० से अधिक शारीरिक एवं मानसिक विकारोंपर उपयुक्त सिद्ध हों, ऐसे विविध नामजप बताए गए हैं ।

卐 **विकार-निर्मूलन हेतु नामजप (महत्त्व एवं शास्त्र)**

卐 **नामजपसे दूर होनेवाले विकार (मुद्रा एवं न्यास भी अंतर्भूत)**

卐 **विकारानुसार नामजप-उपचार (देवताओंके जप, बीजमंत्र इ.)**

पढें सनातनका ग्रन्थ : **अपने स्वभावदोष कैसे ढूंढें ?**

# ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

## सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

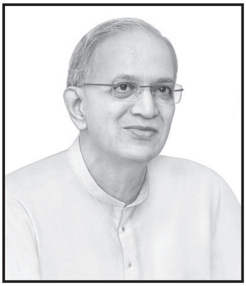

१. ‘ईश्‍वरप्राप्ति हेतु कला’ के विषयमें मार्गदर्शन एवं संगीत, नृत्य आदि कलाओं के सात्त्विक प्रस्तुतीकरण सम्बन्धी शोध

२. आचारपालनके कृत्य, धार्मिक कृत्य एवं बुद्धि-अगम्य घटनाओंका वैज्ञानिक उपकरणोंद्वारा शोध

३. शारीरिक एवं मानसिक तथा अनिष्ट शक्तिजनित पीडाओंकी उपचार-पद्धतियोंके विषयमें शोध

४. १०.५.२०२३ तक २ बालक-सन्तोंको, तथा ६० प्रतिशतसे अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त २३४ और अन्य ९२३ दैवी बालकोंको समाजसे परिचित करवाया । दैवी बालकोंके विषयमें शोध-कार्य भी जारी है ।

५. अपनी (सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी) देह तथा उपयोगकी वस्तुओंमें हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य और अपने महामृत्युयोगका शोधकार्यकी दृष्टिसे अध्ययन

**(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)**

**सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्‍वासन !**

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ – जयंत बाळाजी आठवले
१७.५.१९९८

## पू. संदीप गजानन आळशीजी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति व धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्री (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इ.) के लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

## प्रस्तुत ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(अध्यायके विशेषतापूर्ण शीर्षक नीचे दिए हैं ।)


**अध्याय १. डॉ. आठवलेजीद्वारा की गई आदर्श गुरुसेवा** १३

१ अ. डॉ. आठवलेजीद्वारा अपने गुरुके आश्रममें की सेवा १३

१ इ. डॉ. आठवलेजीद्वारा अनुभूत अपने गुरुकी सगुण सेवाका महत्त्व और सेवाकी कठिनता १६

१ उ. डॉ. आठवलेजीका साधकोंसे गुरुसेवा करवा लेना १९

१ ए. डॉ. आठवलेजीका अपने गुरुकी सीख सबतक पहुंचाना २१

१ औ. प.पू. भक्तराज महाराजजीके गुरुपूर्णिमा महोत्सवोंका आयोजन करना २६

१ औ. प.पू. भक्तराज महाराजजीके अमृत महोत्सव समारोहका आयोजन करना २७

**अध्याय २. डॉ. आठवलेजीका गुरुदेवजीके प्रति भाव** ३५

२ अ. 'प.पू. बाबा ईश्वर हैं', ऐसा प.पू. डॉक्टरजीका भाव होना ३५

२ इ. 'सनातनके आश्रममें प.पू. बाबाकी कृपासे चैतन्य और सात्त्विकता प्रतीत होती है', ऐसा डॉक्टरजीका कहना ३६

२ ऊ. आठवलेजीने स्वयंके सम्मानको गुरुका ही सम्मान मानना ३६

**अध्याय ३. डॉ. आठवलेजीका शिष्यत्व** ३८

३ अ. गुरूकी आज्ञाका यथातथ्य पालन करना ३८

३ ई. डॉ. आठवलेजीपर प.पू. भक्तराज महाराजजीका विश्‍वास ४१

३ उ. गुरुदेवजीको अपेक्षाके अनुसार अर्पण न दे पानेके कारण खेद लगना ४१

३ ए. डॉक्टरजीके सत्संगका अन्योंको लाभ होना तथा तब भी उनका अहं न बढना ४२

३ औ. गुरुपत्नी आश्रममें आनेपर उनके चरणोंपर मस्तक रखकर नमस्कार करना ४३

**अध्याय ४. गुरुने की डॉ. आठवलेजीकी देखभाल** ४९

४ इ. गुरुने शिष्यके ऋणका दायित्व स्वीकारना ५०

४ ए. डॉ. आठवलेजीकी रक्षा करनेसे सम्बन्धित प.पू. बाबाके आश्‍वासक बोल ! ५२

**अध्याय ५. डॉ. आठवलेजीकी अपने गुरुके भक्त और साधकोंके प्रति प्रीति** ५४

५ अ. भक्तोंकी सुविधाके लिए स्वयं भीडमें सोना ५४

**अध्याय ६. डॉ. आठवलेजीकी गुरुसे एकरूपता** ५६

६ अ. 'जो मेरा है, वह आपका है व उसका उपयोग करना आपका अधिकार ही है', ऐसा प.पू. भक्तराज महाराजजीने कहना ५६

६ आ. डॉ. आठवलेजीको गुरु क्या चाहते हैं, इसका भीतरसे बोध होना ५६

६ इ. प.पू. बाबाने उनके देहत्यागके दिन 'डॉक्टर और मैं एक ही हैं', ऐसा साधिकाको स्वप्नमें बताना ५६

**अध्याय ७. गुरुकी 'भजन, भ्रमण और भण्डारा', यह त्रिसूत्री आचरणमें उतारनेवाले डॉ. आठवलेजी !** ५८

# ग्रन्थकी भूमिका

'शिष्य डॉ. जयंत आठवलेजीके गुरु प.पू. भक्तराज महाराज (प.पू. बाबा) सदैव कहते थे, 'सन्तोंसे लूटी जानेवाली दो वस्तुएं हैं – नाम और सेवा !' डॉ. आठवलेजीने अपने गुरुसे ये दोनों बातें भरपूर लूटीं; क्योंकि गुरुके सान्निध्यमें उनका अखण्ड नामजप होता था और 'चित्तको आपकी सेवामें नियुक्त कर दिया है, अब कोई कार्य शेष नहीं है', ऐसी उनकी वृत्ति ही बन गई थी । उन्होंने गुरुचरणोंमें तन-मन-धन अर्पण कर परिपूर्ण सेवा की । इसीलिए उनके गुरुने उनसे कहा था, 'डॉक्टर, मैंने आपको ज्ञान, भक्ति और वैराग्य प्रदान किया !'

डॉ. आठवलेजी अपने गुरुके पास जाते, तब वहांके शौचालयोंकी स्वच्छतासे लेकर गुरुका पथ्य सम्भालनेतक सर्व सेवाएं भूख-प्यास भूलकर करते थे । उनके गुरु जो कहते थे, वह सेवा तो वे तत्काल करते ही थे; साथ ही अपने गुरुके मन की बात जानकर अनेक सेवाएं वे स्वयंप्रेरणासे यथोचित पद्धतिसे करते थे । इसलिए प.पू बाबा उन्हें सदैव अपने निकट रखते । गुरुसेवा करते समय शिष्य डॉ. आठवलेजीकी गुरुसेवाकी लगन, भाव, प्रीति, नेतृत्व, व्यापकता आदि विविध गुणोंका दर्शन इस ग्रन्थसे होता है । उन्होंने केवल स्वयं ही गुरुसेवा नहीं की, अपितु साधकोंको भी सेवाका अवसर दिया तथा उन्हें भी सेवाके माध्यमसे तैयार किया ।

शिष्य जब अपना तन-मन-धन अपने गुरुको अर्पण करता है, तब उसके स्वामित्वकी प्रत्येक वस्तु ही नहीं, अपितु उसके मनका प्रत्येक विचार भी गुरुका ही होता है । डॉक्टरजीकी स्थिति भी ऐसी ही होती । उनके मनका प्रत्येक विचार प.पू. बाबाका ही है, ऐसी प्रतीति उन्हें होती। इससे स्पष्ट होता है कि 'डॉक्टरजीका शिष्यत्व कितने उच्च स्तरका था।' उनके शिष्यत्वकी विविध छटाएं दर्शानेवाला यह ग्रन्थ साधकोंकी 'आदर्श शिष्य' बननेमें अमूल्य सहायता करेगा ।

एक आदर्श शिष्य ही अपने गुरुके कार्यका दायित्व परिपूर्ण सम्भाल सकता है । प.पू. बाबाके गुरुपूर्णिमा महोत्सव, अमृत महोत्सव जैसी बडी-बडी सेवाओंका दायित्व डॉक्टरजी इतनी उत्तम प्रकारसे सम्भालते कि वे सभी सेवाएं सटीक होतीं । अपने गुरुकी सीख समष्टितक पहुंचानेकी विलक्षण लगन और उसके लिए किसी भी प्रकारके परिश्रम करनेकी डॉक्टरजीकी उत्कंठा इससे ध्यानमें आती । इसलिए प.पू. बाबा डॉक्टरजीसे अत्यधिक प्रसन्न रहते, उनकी सार्वजनिक रूपसे प्रशंसा करते और उनके कार्यके लिए आशीर्वाद भी देते । अपने गुरुके आशीर्वादके कारण डॉक्टरजीकी अल्पावधिमें ही अधिक आध्यात्मिक उन्नति हुई और उनके द्वारा प्रारम्भ किया गया अध्यात्मप्रसारका कार्य आज मानो आसमान छू रहा है । ऐसे शिष्यस्वरूप डॉ. आठवलेजीकी साधनायात्रा सभी साधकोंके लिए साधनापथका दीपस्तम्भ ही है ।

आज डॉक्टरजीको 'सच्चिदानन्द परब्रह्म' की उपाधि प्राप्त हो चुकी है; तब भी वे कहते हैं, 'मुझे तो प.पू. बाबाका शिष्य बनकर उनकी सेवा करनेके लिए बार-बार जन्म लेना अधिक प्रिय होगा !', 'ऐसे आदर्श गुरुसेवक और उत्तम शिष्यके दर्शन करवानेवाले इस ग्रन्थके अध्ययनसे आप सबमें भी सेवाभाव और शिष्यभाव शीघ्र उत्पन्न हो तथा आपकी शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति हो', ऐसी श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है !'

**– (पू.) श्री. संदीप आळशी (२.९.२०२२)**

(ग्रन्थमाला 'सच्चिदानन्द परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीका चरित्र' और उपमाला 'सच्चिदानन्द परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीकी साधना यात्रा'का परिचय 'साधनायात्रा : खण्ड १' में दिया है ।)

'प.पू. भक्तराज महाराजजीने डॉ. जयंत आठवलेजीसे कहा था, ''डॉक्टर, आपने जिसे 'अपना' कहा, वह तभी से मेरा भी हो गया ।

**– श्री. अरविंद परळकर, मुंबई, महाराष्ट्र. (दिसम्बर १९८९)**